(A) भौतिक वादी समाज एवं पाठ्यचर्या :-

भौतिकवादी समाज नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल न देकर भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करना चाहता है। अतः इसी दृष्टि से शिक्षा के उद्देश्य भी निर्मित किये जाते है।

(B) आदर्शवादी समाज एवं पाठ्यचर्या :-

आदर्शवादी समाज में नैतिक आदर्शो एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर बल दिया जाता है। पाठ्यचर्या में साहित्य, दर्शन, नीतिशास्त्र इत्यादि को प्रमुख स्थान दिया जाता है।

(C) प्रयोगवादी समाज एवं पाठ्यचर्या :- यह विचार-धारा ऐसी स्वतन्त्रता प्रदान करने का समर्थन करता है जिनमें नये मूल्यों एवं सत्यों को निर्माण कर सकें। अतः स्वभाविक है कि पाठ्यचर्या में नवीन विषयों को अधिक से अधिक समाहित करने पर बल दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में पाठ्यचर्या का निर्धारण :—

भारतीय शिक्षा में प्राचीन काल से ही वैश्विक दृष्टिकोण का समावेश रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी के विकास ने विश्व के देशों की दूरियों को बहुत कम कर दिया है अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास हेतु आवश्यक है शिक्षा के उद्देश्य व्यापक है। पाठ्यचर्या तथा शैक्षिक कार्यक्रमों में समुचित परिवर्तन एवं संवर्धन होना चाहिए।

व्यापकता के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास की दृष्टि से हमारे वर्तमान पाठ्यचर्या का विस्तार इस प्रकार हो —

(i) पाठ्यचर्या में देश - विदेश के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का समावेश।
(ii) पाठ्यचर्या में अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषाओं को स्थान देना।
(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ या विभिन्न संस्थाओं के उद्देश्यों को शैक्षिक कार्यक्रम में सम्मिलित करना।

Scanned with CamScanner

छात्रों के सामाजिक - सांस्कृतिक सन्दर्भ - (बहुसांस्कृतिक व बहुभाषिक पहलू) —:

भारत में असंख्य स्थानीय परम्पराएं हैं। इसी प्रकार शिक्षा के सामाजिक सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या की कुछ प्रमुख विशेषताओं को निहित करना आवश्यक है।

(i) व्यक्ति के व्यवहार को वातावरण के अनुसार परिवर्तित करना।

(ii) व्यक्तिवाद का विरोध तथा सामाजिक गुणों का विकास करना।

(iii) निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा।

(iv) प्रौढ़ शिक्षा एवं समाज शिक्षा के प्रसार पर बल।

राष्ट्रीय आस्मिता एवं एकता का सुदृढ़ीकरण भारत की सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन के साथ गहराई से जुड़ा है। अतः राष्ट्रीय पहचान के लिए आवश्यक है पाठ्यचर्या में स्थान।

Scanned with CamScanner

(बहुभाषावाद)

इसी प्रकार जहाँ तक बहुभाषावाद की अवधारणा का प्रश्न है तो भारत विभिन्नताओं से युक्त देश है। सांस्कृतिक खुलेपन की वजह से बहुभाषिता एक सामाजिक आवश्यकता बन जाती है। अतः पाठ्यचर्या निर्धारण में भी इस बहुभाषिकता को स्थान दिया जाना चाहिए। भारत की भाषिक विविधता एक जटिल चुनौती प्रस्तुत करती है परन्तु यह कई प्रकार के अवसर भी प्रदान करती है।

भारत एक ऐसा अनूठा देश है जहां पांच भाषा परिवार पाये जाते है। भारत में विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां सदियों से एक दूसरे को समृद्ध करती है।

Scanned with CamScanner